INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 10 | NOVEMBER - 2023

बुद्ध धम्म एवं अन्य धर्म का तुलनात्मक अध्ययन

प्रा. बबन पी. मेश्राम
समाजशास्त्र विभाग प्रमुख, एन.एम.डी. कॉलेज, गोंदिया,

प्रस्तावना :—

कई धर्म संस्थापकों में से ऐसे चार धर्म संस्थापक हैं जिनके धर्मोंने न केवल भूतकाल में विश्व को प्रेरणा दी थी बल्कि आज भी कुछ लोगों को वैसे ही प्रभावित कर रहे है । वे हैं बुद्ध, ईसा मसिह, मोहम्मद और कृष्ण । इन चारों के व्यक्तित्व की और अपने धर्म के प्रचारार्थ उन्होंने अपनाए हुए ढंगों की एक ओर बुद्ध से और दूसरी ओर बाकी सब के साथ तुलना करने पर ऐसी कुछ भिन्नताओं का रहस्योद्घाटन होता है जो महत्वहीन नहीं है ।

पहली बात जो बुद्ध को शेष सभी से निराला ठरहाती है, वह है उनके व्यक्तिगत महात्म्य का त्याग । बाइबल की पूरी किताब में ईसा मसिह ने जोर देकर इस बात को कहा है कि वे साक्षात् ईश्वरपुत्र हैं और जो लोग ईश्वर के राज्य—स्वर्ग—में प्रवेश करना चाहते हैं, उनके सभी प्रयास विफल ही होंगे अगर उन्होंने ईसा मसिह को ईश्वरपुत्र के रूप में स्वीकार नहीं किया महम्मद इससे भी एक कदम आगे बढे । ईसा मसिह के समान उन्होंने भी ऐसा दावा किया कि वे धरती पर खुदा के पैगंबर याने दूत बनकर आये हैं । लेकिन उन्होंने आगे इस बात को जोर देकर कहा कि वे खुदा के आखरी पैंगबर है । इसी कारण से उन्होंने यह घोषणा की, कि मुक्ति चाहनेवालों को न केवल उन्हें खुदा का पैगंबर मानना पडेगा बल्कि यह भी स्वीकार करना होगा कि वह आखरी पैगंबर है । कृष्ण तो ईसा मसिह और मुहम्मद से भी और एक कदम आगे बढ़े । केवल ईश्वरपुत्र अफवा खदा का पैगंबर बनने से संतुष्ट होना उन्हें स्वीकार नहीं था । खुदा का आखरी पैंगबर बनने में भी उन्हें कोई तृप्ती नहीं थी । इतना ही नहीं बल्कि अपने आप को ईश्वर कहलाने से भी वे तृप्त नहीं हुए । उन्होंने दावा किया कि वे खुद साक्षात् 'परमेश्वर' हैं या उनके भक्तगण की मान्यता के अनुसार 'देवाधिदेव' हैं । इस प्रकार अपनी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा को बलात प्रस्थापित करने की अहंकार भरी चेष्टा बुद्ध ने कभी नहीं की । उन्होंने एक मनुष्य के पुत्र होने के नाते जन्म पाया था, और एक साधारण पुरूष बने रहने में तथा एक साधारण पुरूष के नाते अपनी धम्मदेसना देने में वह संतुष्ट थे । उन्होंने कभी अपनी जन्म अलौकिक होने की या तो अपने पास कोई अलौकिक शक्ति होने की बात नहीं की, ना ही अपनी अलौकिक शक्ति के प्रदर्शन हेतु कोई चमत्कार दिखाए । बुद्ध ने मार्गदाता और मोक्षदात में स्पष्ट भेद किया । ईसा मसिह, मुहम्मद और कृष्ण ने अपने आप को मोक्षदाता की भूमिका में कायम किया । मात्र बुद्ध मार्गदाता की भूमिका निभाने से संतुष्ट थे ।

उद्देश्य :—

डॉ. अम्बेडकर की मान्यता थी कि वर्ण—व्यवस्था पर आधारित विषमताग्रस्त समाज को समता में ढालने के लिए बौद्ध धम्म के सिवाय कोई चारा नही है । लेकिन वह बौद्ध धम्म आधुनिक युग में कैसे

लागू होता है ? और उसके प्रचार और प्रसार के लिए क्या करना चाहिए ? इन प्रश्नों पर आधारित बुद्ध धम्म एवं अन्य धर्म का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास किया है ।

बौद्ध धम्म की तुलना हिंदु धर्म से :–

हिंदु धर्म एक ऐसा धर्म है जो सदाचार पर आधारित नहीं है । जो कुछ सदाचार हम उसमें देखते हैं वह उसका अखण्डात्मक अंग नहीं है । उसका निर्माण धर्म के ढॉचे से जुड़ा नहीं है । वह एक पृथक् शक्ति है, जो हिंदु धर्म के आदर्शों के नही अपितु सामाजिक आवश्यकताओं के कारण टिकी हुई है । बुद्ध का धम्म ही सदाचार है । यह धम्म के ढॉचे की आंतरिक रचना से जुड़ी चीज़ है । बुद्ध धम्म अगर सदाचार से परे हो तो धम्म नहीं रहता । यह सच है कि बौद्ध धम्म में ईश्वर नहीं है । ईश्वर के स्थान पर वहॉ सदाचार स्थापित है । दूसरे धर्मो में ईश्वर का जो स्थान है, वही बौद्ध धम्म में सदाचार का है ।

बुद्ध ने 'धम्म' शब्द की सब से क्रांतिकारी व्याख्या की है, यह बात शायद ही समझी जाती है । 'धम्म' शब्द का वैदिकों ने किया अर्थ किसी भी तरह सदाचार नहीं दर्शाता । धर्म को जिस अर्थ में ब्राम्हणों ने स्पष्ट किया है और जिस अर्थ में जैमिनी के पूर्व भीमांसा में प्रतिपादित किया गया है, वह कुछ कर्मो के करने के सिवाय अथवा और रोमन लोगों के शब्दों में धार्मिक आचार–विधिओं के सिवाय और कुछ नहीं था । ब्राम्हणों के विचार में धर्म के माने यज्ञ–याग और उन में देवताओं को दिये जोनेवाले पशुबलि का कर्मकाण्ड़ इतना ही अर्थ था । ब्राम्हणों के वैदिक धर्म का यही सार था । सदाचार से उसका कोई सरोकार नहीं था ।

बुद्ध ने 'धम्म' शब्द का प्रयोग जिस अर्थ से किया है उसका धार्मिक आचार–विधि तथा कर्मकांड से कोई सरोकार नहीं था । वास्तविक उन्होंने यज्ञ–योग को धर्म का सार मानने से साफ इन्कार किया है । उन्होंने धर्म का सार माने गये कर्मकाण्ड़ की जगह सदाचार की स्थापना की । यद्यपि धम्म शब्द का प्रयोग ब्राम्हण आचार्य और बुद्ध दोनों ने भी किया है, लेकिन इन दोनों की दृष्टि में इस शब्द का अर्थ मूलत: क्रांतिकारी भेद रखता है । वास्तविकता के तौर पर तो हम यूँ कह सकते है कि बुद्ध विश्व के पहले ऐसे धर्म संस्थापक है जिन्होंने सदाचार को धर्म का सार तथा नींव बनाया । कृष्ण भी, जैसा कि भगवद् गीता से देखा जा सकता है, अपने आप को धर्म की यज्ञ–योग जैसे कर्मकाण्ड के बराबर होने की संकल्पना से पृथक् नहीं कर सके थे । कृष्णद्वारा भगवद् गीता में चर्चित निष्काम कर्म अथवा अनासक्तियोग के दर्शन से काफी लोग मत्रमुग्ध हुए नजर आते है । बच्चें के स्काऊट में जिस प्रकार किसी इनाम की आशा किए बगैर नेकी से अपना काम करने की शिक्षा दी जाती है, कुछ वैसे ही अर्थ से यह बात वहॉ कही गयी है । वह उसके वास्तविक अर्थ से परे तथा संपूर्णतया गलत अर्थ से कहीं गयी है । निष्काम कर्म इस शब्दप्रयोग से कर्म करने की क्रिया के अर्थ से किया गया 'कर्म' नहीं समझा गया है । अपितु ब्राम्हणों ने और जैमिनी ने मूलत: उसका जिस अर्थ से प्रयोग किया है उसी (यज्ञ) याजनादि कर्मकाण्ड़ के अर्थ से उसका गीता में प्रयोग किया गया है । कर्मकाण्ड के मुद्दे को लेकर जैमिनी और भगवद् गीता में एक ही अंतर है । ब्राम्हण जिस कर्मकाण्ड के आदी थे उसके दो प्रकार थे : १) नित्य कर्म और २) नैमित्तिक कर्म ।

बौद्ध धम्म और अन्य धर्म में तुलना :–

हिंदु, इसा, मुस्लीम और बौद्ध धम्म इन चार धर्म–संस्थापकों के बीच और भी एक भेद है । ईसा मसिहा और मुहम्मद इन दोनों ने भी यह दावा किया है कि उनकी शिक्षा स्खलनशील याने झूठ साबित होनेवाली नहीं है और इसलिए किसी भी संदेह से परे है । कृष्ण ने तो स्वयं को देवाधिदेव घोषित किया था । इसलिए उसने जो कुछ शिक्षा दि वह ईश्वरवाणी होने से तथा प्रत्यक्ष ईश्वरमुख से प्रकट होने से तो असली और अंतिम थी ही, और उसके स्खलनशील या झूठ होने का तो कोई सवाल ही नहीं उठता था । बुद्ध ने अपनी शिक्षा के लिए अस्खलनशील या झूठ साबित न होने का कोई दावा नहीं किया है । 'महापरिनिब्बाणसुत्त' में आनेद को संबोधित कर उन्होंने बताया है कि उनका धम्म तर्कसंगत और अनुभव पर आधारित है और उनके अनुयायियों को चाहिए कि वे इस शिक्षा को केवल इस कारण सही और स्वीकारणीय हीं माने कि वह उन (बुद्ध) से प्राप्त हुई है । यह शिक्षा तर्कसंगत और अनुभव पर आधारित

होने से यदि किसी समय और किसी विशेष स्थिति में वह लागू नहीं होती हो, तो वे (अनुयायी) चाहे तो उसमें सुधार कर सकते हैं, या तो गैरलागू शिक्षा को त्याग भी सकते है । वे चाहते थे कि उनके धम्म पर भूतकाल के मुर्दा बोझ न लादे जाएं । वे चाहते थे कि उनका धम्म सदाबहार रहे और सभी समय काम आएं यही कारण था कि जरूरत पड़ने पर अपने अनुयायियों को उन्होंने अपनी शिक्षा में समयानुकूल काट–छॉट करने की स्वतंत्रता दे रखी है । ऐसा करने का साहस अन्य किसी भी धर्म–संस्थापक ने नहीं दिखाया है । वे ऐसी स्वतंत्रता देने से डरते थे । कारण उन्हें इस बात का डर था कि अनुयायियों को अपनी शिक्षा में सुधार करने की स्वतंत्रता देने से कहीं वे उसका इस्तेमाल अपने बन–बनाये ढॉचे को गिराने में नह करें । बुध्द को ऐसा डर नहीं था । उनको अपनी शिक्षा की नींव पर पूरा भरोसा था । वे भलीभॉती जानते थे कि सब से भयंकर मूर्तिभंजक भी उनके धम्म के आंतरिक हिस्से को नष्ट नहीं कर पाएगा ।

निष्कर्ष :–

बौद्ध वाड्मय अति विशाल है । जो व्यक्ति बुद्ध धम्म का सार जानना चाहता है उससे इस वाड्. गमय समुंदर को पार करने की आशा रखना असंभव है । बुध्द धम्म की तुलना में अन्य धर्मो में अधिक लाभ पहॅचानेवाली बात यह है कि उनकी अपनी ऐसी एक ही धर्म–पुस्तक है कि कोई भी आदमी उसे सहजता से अपने साथ रख सकता है और जी चाहे तब पढ़ सकता है । यह बहुत ही सुविधाजनक बात होती है । ऐसी सुविधाजनक धर्म–पुस्तक के अभाव में बुद्ध धम्म की हानि होती है । एक धर्म–ग्रंथ से जो आशा की जाती है वह भूमिका निभाने में भारतीय धम्मपद असफल रहा है । प्रत्येक महान धर्म का निर्माण श्रद्धा के लिए जिससे कल्पनाशक्ति जुड़ जाए ऐसी कोई कल्पित कथा, या वीरगाथा अथवा शिक्षा की, जिसे आधुनिक पत्रकारी में कहानी कहते हैं, जरूरत होती है । धम्मपद इस तरह किसी कहानी में गूँथा हुआ नहीं है । वह अमूर्त तत्वों के सहारे श्रद्धा को बढ़ाना चाहता है ।

संदर्भ सूची :–

1. Agrawal, Bina, 1994. 'Gender, Resistance and Land : Interlinked Struggles Over Resources and Meanings in South Asia'. Journal of Peasant Studies, 22(1).
2. Aggarwal, R.C. 1974. 'Women's Liberation in India' Social Welfare, 20(10). January.
3. घनश्याम शाह : ''भारत में सामाजिक आंदोलन'', संबंधित साहित्य की एक समीक्षा Rawat Publications, Jaipur 302 004.
4. बोधिसत्व डॉ. भीमराव आम्बेडकर, 'बुद्ध और उनके धम्म का भविष्य' (अनुवाद, धम्मचारी विमलकीर्ती धम्मचक्र प्रवर्तन महाविहार दापोडी, पुणे – 12)